आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 3 अंक : 1 बीकानेर, सितम्बर, 2015 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

69वें स्वाधीनता दिवस समारोह में कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत ने राजुवास में ध्वजारोहण कर सलामी दी। इस अवसर पर उन्होंने शैक्षणिक, अनुसंधान, प्रसार एवं उत्कृष्ट कार्य करने वाले छात्र-छात्राओं, कर्मचारियों एवं शिक्षकों को सम्मानित किया। कुलपति महोदय के उद्‌बोधन के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं-

प्रिय विद्यार्थियों, कर्मचारियों, अधिकारियों, फैकल्टी सदस्यगण, उपस्थित महिलाएं और बच्चों! आज 69वें स्वाधीनता दिवस के पावन अवसर पर मैं, आप सबको बधाई देता हूँ। स्वाधीनता दिवस हजारों देश वासियों के बलिदान और स्वंतत्रता सेनानियों के उत्सर्ग का परिणाम है। आज उनके पुनीत स्मरण और कृतज्ञता व्यक्त करने का दिन है। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के पांच वर्ष पूरे कर लिए हैं। इसकी विकास रफ्तार को आगे बढ़ाने और नए आयाम जोड़ने में आप सबका सहयोग और प्रयास सराहनीय हैं। यहां के विद्यार्थियों ने अपनी योग्यता और ज्ञान कौशल के बूते पशुचिकित्सा के शैक्षणिक और अनुसंधान क्षेत्र में देश–विदेश में अपना परचम फहराया है। हाल ही में एक छात्रा ने संयुक्त राज्य अमेरिका में शोध के लिए अपनी उपस्थिति दर्ज की है। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने राज्य में प्रत्येक ग्राम पंचायत मुख्यालय पर पशुचिकित्सा तकनीक और प्रसार शिक्षा कार्यों को कृषकों–पशुपालकों तक पहुंचाने के लिए ''राजुवास सखा/सखी'' को प्रशिक्षित करने की योजना पर कार्य शुरू किया है।

राज्य में देशी गौवंश के संरक्षण और प्रजनन की योजनाओं के अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। राज्य में मालवी गौ नस्ल संवर्द्धन का एक केन्द्र डग (झालावाड़) में शुरू करने की कार्यवाही शुरू हो गई है। यह विश्वविद्यालय का छठा अनुसंधान केन्द्र होगा। वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों से कांकरेज गौनस्ल ने 2 साल की उम्र में ही बछडी को जन्म दिया जो कि स्वदेशी गौनस्लों के लिए नया कीर्तिमान है। देशी गौवंश के संवर्द्धन और संरक्षण उपायों से राज्य में दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए किए जा रहे प्रयासों के अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। राज्य सरकार ने धौलपुर में बकरी फार्म की स्थापना हेतु 25 हैक्टर भूमि का आंवटन कर दिया है। लूनकरणसर (बीकानेर) में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र शीघ्र ही प्रारम्भ कर दिया जायेगा। विश्वविद्यालय में इस वर्ष वृक्षारोपण कार्यक्रम में 1200 पौधे रोपित किए जायेंगे। विश्वविद्यालय की स्थापना 15 करोड़ रू. राशि के बजट से शुरू की गई जो अब बढकर 137.07 करोड़ रू. के पार हो चुका है। विश्वविद्यालय ने सकारात्मक सोच के साथ तेजी से आगे बढ़ते हुए कार्य शुरू किया है। समयबद्ध योजना की बदौलत समय से पूर्व भी काम पूरे हो रहे हैं। आइए! हम सब मिलकर इस विश्वविद्यालय को नई ऊंचाईयों की ओर ले जाकर पशु चिकित्सा और पशुपालन में राज्य की अपेक्षाओं को पूरा करें। जयहिन्द!

(प्रो. ए. के. गहलोत)

''पशुपालन नए आयाम'' के सफलतापूर्वक दो वर्ष के सफर पर हार्दिक बधाई

मुख्य समाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय में ''हरियालो राजस्थान'' अभियान की शुरूआत

वेटरनरी विश्वविद्यालय परिसर में 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस समारोह में वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री श्री राजकुमार रिणवां ने पौधा रोपित कर "हरियालो राजस्थान" अभियान की शुरूआत की। राजस्थान पत्रिका के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित इस अभियान में जनप्रतिनिधियों, गणमान्य लोगों और बड़ी संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियों ने विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर और छात्रावास में सघन वृक्षारोपण किया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत, लूणकरनसर विधायक श्री मानिकचन्द सुराणा, कोलायत विधायक श्री भंवर सिंह भाटी, पूर्व सिंचाई मंत्री श्री देवी सिंह भाटी, पूर्व महापौर श्री भवानीशंकर शर्मा, पूर्व यू.आई.टी. अध्यक्ष मकसूद अहमद, कुलसचिव श्री प्रेमसुख बिश्नोई, अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिकों, विश्वविद्यालय के अधिकारी छात्र–छात्राओं और प्राध्यापकों ने वृक्षारोपण कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम के तहत विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों एवं संस्थानों पर लगभग 1200 पौधे लगाए जायेंगे। वेटरनरी कॉलेज की राष्ट्रीय स्वयं सेवा इकाई के 40 स्वयं सेवकों ने कार्यक्रम प्रभारी डॉ. नीरज शर्मा के नेतृत्व में वृक्षारोपण कार्यक्रम की बागडोर संभाली।

ग्राम जोड़ी (चूरू) में पशुपालक विचार-गोष्ठी

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 6 अगस्त, 2015 को ग्राम जोडी, चूरू में एक दिवसीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। केन्द्र प्रभारी डॉ. राजेश सिंगाठिया ने पशुपालकों को पशुओं के आहार के मुख्य अवयव जैसे सूखा चारा, हरा चारा और दाना के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि दुधारू पशुओं को संतुलित एवं पोषक तत्वों से युक्त आहार खिलाने से ही अधिक दूध प्राप्त किया जा सकता है। शिविर में 24 पशुपालकों ने भाग लिया।

गांव भोजपुरा (कोटा) में 40 पशुपालकों का प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुंसधान केन्द्र, कोटा द्वारा ग्राम भोजपुरा में 11 अगस्त, 2015 को उन्नत पशुपालन तकनीक द्वारा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि विषय पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। प्रशिक्षण शिविर में 40 पशुपालकों ने भाग लिया।

डेयरी में चारे की महत्ता पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुंसधान केन्द्र, कुम्हेर जिला भरतपुर द्वारा ग्राम कठेरा में 12 अगस्त, 2015 को पशुओं के आहार में खरीफ फसल के विभिन्न चारों के विकास व दुग्ध उत्पादन में चारे की महत्ता पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। प्रशिक्षण शिविर में 30 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु बांझपन पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुंसधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा ग्राम परमदरा (डीग) में 19 अगस्त, 2015 को पशु बांझपन व नस्ल सुधार पर श्री बलवीर सिंह पटेल, सरंपच की अध्यक्षता में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। प्रशिक्षण शिविर में 24 पशुपालकों ने भाग लिया।

गांव टोकी में पशुपालकों को प्रशिक्षण

वीयूटीआरसी, बाकलिया (लाड़नूं) द्वारा 20 अगस्त को गांव टोकी (लाड़नूं) में ''संतुलित आहार का दुग्ध उत्पादन पर प्रभाव'' विषय पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 25 पशुपालकों ने भाग लिया।

ग्राम सहजुसर में पशुपालन प्रशिक्षण शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 22 अगस्त, 2015 को ग्राम सहजुसर (चूरू) में ''स्वच्छ दूध उत्पादन एंव पशुओं का स्वास्थ्य'' विषय पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण शिविर सरपंच ग्राम सहजुसर, श्री शीशुपाल के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। शिविर में 36 पशुपालकों ने भाग लिया।

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

गिर बछड़ों के प्रदर्शन पर खनिज मिश्रण पूरकता का प्रभाव

विश्वविद्यालय के जयपुर स्थित स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान में गिर बछड़ों में शारीरिक वृद्धि प्रदर्शन, पोषक तत्व उपयोजन दक्षता, रक्त जैव रासायनिक मापदण्डों एवं सीरम खनिज प्रोफाईल के सन्दर्भ में खनिज मिश्रण के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। समूह जी$_1$ नियंत्रण समूह था, जिसमें बछड़ों को खनिज मिश्रण नहीं दिया गया, जबकि परीक्षण समूह जी$_2$ के बछड़ों को समान आहार के साथ ही खनिज मिश्रण भी खिलाया गया। पाचन शक्ति परीक्षण सहित कुल 90 दिनों की अवधि के लिए अध्ययन आयोजित किया गया। शारीरिक मापदण्डों जैसे लम्बाई, ऊंचाई एवं वक्ष परिधी 15 दिनों के अन्तराल पर मापे गये। जी$_1$ में कुल भार अर्जन 31.09 किलो एवं जी$_2$ में 49.07 किलो हुआ जब कि जी$_1$ में औसत दैनिक भार अर्जन 345.53 ग्राम एवं जी$_2$ में 545.27 ग्राम पाया गया। बछड़ों के दोनों समूहों में खाद्य रूपान्तरण दक्षता में अन्तर पाया गया। जी$_2$ समूह में शुष्क पदार्थ, कच्ची प्रोटीन, कच्चे रेशे एवं कार्बनिक पदार्थ की पाचकता पर खनिज मिश्रण का अधिक प्रभाव मिला जब कि उदासीन अपमार्जक रेशों की पाचकता पर प्रभाव अवलोकित हुआ। परीक्षण के 90 दिनों के उपरान्त रक्त के जैव, रासायनिक प्राचलों जैसे हीमोग्लोबिन, रक्त, ग्लूकोस, कुल प्रोटीन, एल्ब्यूमिन, ग्लोब्यूलिन एवं रक्त यूरिया नाईट्रोजन में खनिज मिश्रण के प्रभाव से भिन्नता पायी गयी। खनिज मिश्रण पूरित समूह का सीरम खनिज प्रोफाईल भी प्रत्यक्षतः अधिक पाया गया। अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भोजन के माध्यम से खनिज मिश्रण सम्पूरण अत्यन्त लाभकारी एवं लागत प्रभावी हो सकता है। खनिज मिश्रण बछड़ों की वृद्धिप्रावस्था में वृद्धि दर को बढ़ाता है तथा पोषक तत्व उपयोजन दक्षता एवं सीरम खनिज स्तर को भी संशोधित करता है। **शोधकर्त्ता– पूनम यादव, समादेष्टा–डॉ. शीला चौधरी**

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-सितम्बर, 2015

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	बाँसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्री गंगानगर, जयपुर, झुंझुनू, धौलपुर, सवाई माधोपुर, अलवर, बूंदी, हनुमानगढ़, चूरू,कोटा
बोवाइन इफिमिरल ज्वर	गाय, भैंस	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जयपुर, चितौड़गढ़
गलघोंटू	भैंस, गाय	हनुमानगढ़, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, दौसा टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, चितौड़गढ़, श्रीगंगानगर, अलवर
ठप्पा रोग	गाय, भैंस	हनुमानगढ़, जयपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, राजसमन्द, अनूपगढ
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	भैंस	सीकर, सिरोही, पाली, जालोर, हनुमानगढ़, जयपुर, कोटा
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाईमाधोपुर, बांसवाडा, जयपुर, कोटा, सीकर, बीकानेर, श्रीगंगानगर
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़, ऊंट	जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
चेचक	बकरी, भेड़, ऊंट	जयपुर, श्री गंगानगर, बीकानेर
सर्रा	ऊंट, भैंस	बांसवाडा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बूंदी, सीकर, श्रीगंगानगर
थाइलेरिओसिस एवं बेबीसियोसिस	भैंस, गाय	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, चूरू, सवाई माधोपुर, श्री गंगानगर, जयपुर
पर्ण–कृमि	भैंस, गाय, भेड़, बकरी, ऊंट	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बांसवाड़ा, सवाई माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, सीकर
खुजली	ऊंट, भेड़	झुंझुनू, बीकानेर, श्रीगंगानगर

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में कोक्सीडियासिस (खूनी दस्त), गोल एवं फीता–कृमि, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. (डॉ.) त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. (डॉ.) अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं प्रो. (डॉ.) ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

अपने विश्वविद्यालय को जानें : पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर का पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा विभाग सन् 1964 में अस्तित्व में आया। डा. औंकार नाथ कुंजरू इस विभाग के प्रथम विभागाध्यक्ष थे। वर्तमान में विभाग में एक प्राध्यापक, एक सहायक प्राध्यापक एवं दो टीचिंग एसोसिएट कार्यरत हैं। कार्य प्रणाली की दृष्टि से यह विभाग त्रि–आयामी विभाग है, जिसमें शैक्षणिक एवं शोध कार्य के अतिरिक्त प्रसार शिक्षा की गतिविधियाँ चल रही है।

विभाग में बी.वी.एस.सी. एण्ड ए.एच. पाठयक्रम हेतु भारतीय पशु चिकित्सा परिषद के मानदण्डों तथा एम.वी.एस.सी. पाठयक्रम हेतु भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के मानदण्डों के अनुसार सैद्धान्तिक और प्रायोगिक कार्य हेतु पर्याप्त सुविधायें हैं। विभाग द्वारा अब तक 3 स्नातकोत्तर उपाधियां प्रदान की गयी है। स्नातकोत्तर छात्रों द्वारा डूंगरपूर, बांसवाडा, जोधपुर व बाड़मेर जिलों में सर्वेक्षण किया गया है, जिसमें पशुपालकों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को जाना गया है।

विभाग की एक स्नातकोत्तर छात्रा द्वारा जैविक खेती के विषय पर शोध कार्य किया गया है। विभाग द्वारा किये गये अनुसंधान कार्यो को शोध पत्रों द्वारा राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता रहा है। विभाग द्वारा समय–समय पर लीफलेट, बुलेटिन, फोल्डर एवं बुकलेट जैसी मुद्रित सामग्री पशु पालकों में वितरित की जाती है। विभाग में एक उच्चस्तरीय अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित स्मार्ट क्लासरूम एवं एक संग्रहालय है जिसमें लगे नवीनतम उपकरणों एवं उच्च तकनीक की जानकारी प्रदान की जाती है। विभाग में स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों को प्रसार शिक्षा, दृश्य–श्रव्य यंत्र, प्रचार–प्रसार सामग्री व अत्याधुनिक तकनीकों के बारे में जानकारी दी जाती है, जिससे विश्वविद्यालय द्वारा विकसित नई तकनीकों को किसान व पशुपालक भाईयों तक पहुँचाने में मदद मिलती है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित नवीनतम तकनीकों को विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पशु स्वास्थ्य शिविरों द्वारा समय–समय पर पशुपालक भाईयों तक पहुँचाया जाता है। भारत सरकार के ''स्वच्छ भारत अभियान'' के अन्तर्गत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए ग्राम 'डाईया' एवं ''कान सिंह की सिढ़'' में स्वच्छता अभियान भी विभाग द्वारा चलाया जा रहा है। ग्राम डाईया को आदर्श ग्राम के रूप में विकसित करने के प्रयास भी विभाग द्वारा किये जा रहे हैं।

विश्वविद्यालय का प्रथम दीक्षांत समारोह 16 सितम्बर 2015 को

1127 विद्यार्थियों को उपाधियां और 57 को स्वर्ण पदकों से नवाजा जाएगा

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय का प्रथम दीक्षांत समारोह आगामी 16 सितम्बर 2015 को आयोजित किया जाएगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि राजभवन से विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तावित प्रथम दीक्षांत समारोह आयोजित करने की स्वीकृति की सूचना राजुवास को प्राप्त हो गई है। माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह की अध्यक्षता में दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जाएगा। कुलपति प्रो. गहलोत ने बताया कि राज्य के पहले वेटरनरी विश्वविद्यालय की स्थापना मई 2010 में होने के बाद इस प्रथम दीक्षांत समारोह में स्नातक, स्नातकोत्तर और विद्यावाचस्पति की 1 हजार 127 उपाधियां और 57 छात्रा–छात्राओं को स्वर्ण पदक और प्रमाण पत्रों से नवाजा जाएगा।

देशी गौवंश का संवर्द्धन: वर्तमान की आवश्यकता

पशुपालन का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। प्रारंभिक अवस्था में सभी पालतू पशु जंगली अवस्था में थे जिन्हें कालान्तर में मानव द्वारा पालतू बनाकर व संवर्द्धन किया। सन 1939 में कृत्रिम गर्भाधान तकनीकी से संकर पशुओं का बनना शुरू हुआ, वह दौर इतना बढ़ा कि हमारे देश में शुरू से मौजूद 26 वर्णित देशी नस्लों के अस्तित्व को खतरा महसूस होने लगा। 100 प्रतिशत शुद्ध नस्ल के गीर, साहीवाल, लालसिधीं, थारपारकर, राठी, कांकरेज तथा अन्य नस्लों के पशु मिलना मुश्किल होने लगे हैं। यहाँ महत्त्वपूर्ण मुद्दा यह है कि हमारे देश में मौजूद वर्णित देशी नस्ल के पशुओं की दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विशिष्टताएँ हैं। पहली विशिष्टता यह है कि उनकी तापमान को सहन करने की क्षमता विदेशी तथा संकर पशुओं की अपेक्षा काफी ज्यादा है। दूसरी विशिष्टता यह है कि उनकी रोग–प्रतिरोधक क्षमता शुद्ध विदेशी संकर नस्लों के पशुओं की अपेक्षा ज्यादा होती है। वर्तमान समय में चर्चा का विषय यह है कि संकर नस्लों के गाय का दूध उत्पादन देशी वर्णित नस्लों के गायों के दूध उत्पादन से ज्यादा होता है। इसका जवाब यह है कि वैज्ञानिक ढ़ंग से आदर्श रूप से निर्मित कुछ गायों का दूध उत्पादन ज्यादा जरूर होता है लेकिन उसे बरकरार रखने के लिए काफी मेहनत, संसाधन तथा मजदूरी की आवश्यकता पड़ती है। संकर गायें काफी नाजुक होती हैं तथा वातावरण के, तापमान में तथा विकटतम परिस्थितियों में चारे अथवा प्रबंधन में जरा भी बदलाव हुआ तो उनके दूध उत्पादन में कमी आती है। इसके विपरीत देशी वर्णित नस्लों की गायों का दूध उत्पादन संकर नस्ल की गायों की अपेक्षा कम प्रभावित होता है क्योंकि उनमें परिवर्तन को सहन करने की क्षमता अधिक होती है।

इन तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि 5 से 7 लीटर प्रतिदिन दूध उत्पादन देने वाली संकर गाय को पालने के बजाय अगर हमें इतना ही दूध उत्पादन प्रतिदिन देने वाली देशी नस्ल की गाय मिल जाये तो उन्हें पालना ज्यादा फायदेमंद होगा क्योंकि उनके रखरखाव, चारा प्रबंधन, स्वास्थ्य व प्रबंधन पर कम खर्च होता है। देशी वर्णित नस्ल की गाय भारत की उष्ण जलवायु से पूर्ण परिचित है तथा इन पर वातावरण का प्रभाव संकर नस्ल की गायों की अपेक्षा कम होता है। देशी नस्ल के पशुओं को पालने में विशेष तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती। दूरदराज में स्थित ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले किसान इन्हें आसानी से पाल सकते हैं। भारत में कृषि प्रमुख व्यवसाय होने से कृषि से प्राप्त चारा फसलों के अवशेष आदि का इस्तेमाल कर उनका पोषण प्रबधंन आसानी से किया जा सकता है। रोग–प्रतिरोधी क्षमता ज्यादा होने से उनमें अपेक्षाकृत कम बीमारियाँ होती हैं। इनके आवास हेतु महंगे बाड़े की जरूरत नहीं होती। कुल मिलाकर उनके प्रबंधन पर अपेक्षाकृत कम खर्च होता है।

संकर नस्ल की गायों के दूध में फैट (वसा) का प्रतिशत कम होता है– उदाहरण जर्सी संकर नस्ल की गायों के दूध में औसतन 4 प्रतिशत से 4.4 प्रतिशत तथा होलेस्टीन फ्रीजीयन संकर नस्ल की गायों के दूध में 3.5 प्रतिशत फैट होता है। वहीं देशी वर्णित नस्लों की गाय जैसे लाल सिधीं गाय के दूध में 4.9 प्रतिशत, गीर गाय के दूध में 4.43 प्रतिशत, साहीवाल नस्ल की गाय के दूध में 4.55 प्रतिशत फैट होता है। दूध का भाव उसमें मौजूद फैट के आधार पर तय होता है। इस तथ्य से यह सकते है कि देशी गायों का दूध बेचकर ज्यादा मुनाफा मिल सकता है। इसके साथ ही विदेशी नस्ल की गायों तथा देशी नस्ल की गायों के दूध की गुणवत्ता में अत्यधिक फर्क पाया जाता है। डॉ. कीथ वुडफॉर्ड के अनुसार विदेशी नस्ल की गायों में ए1 बीटा केसिन नामक प्रोटीन पाया जाता है जो कि मधुमेह रोग, हृदय घात तथा कई मानसिक रोगों का कारक है तथा देशी नस्ल की गौवंश जैसे गीर, थारपारकर, साहीवाल, राठी गायों के दूध में ए1 बीटा केसिन नहीं पाया जाता है। इसके विपरीत देशी गौ वंश में ए2 बीटा केसिन पाया जाता है जो स्वास्थ्यवर्धक है। अतः यह कहने में कोई संकोच नहीं कि हमारी देशी नस्ल की गायों का दूध अति गुणकारी है।

ग्रामीण जनता की आर्थिक स्थिति उनके ज्ञान व शिक्षण स्तर, ग्रामीण क्षेत्र में मौजूद पशु चिकित्सक की सुविधा, कृत्रिम गर्भाधान की व्यवस्था हर जगह न होना आदि सभी विषयों को ध्यान में रखें तो देशी वर्णित उच्च उत्पादक गायों की नस्लों का समुचित प्रबंधन द्वारा पशुपालक को लाभ प्राप्त हो सकता है।

प्रो. सुभाषचन्द्र गोस्वामी, डॉ.देवेन्द्रसिंह मनोहर
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, (मो.9828201527)

पशुओं में बांझपन निवारण की चुनौती

भारत दूध के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान रखता है। भारत में लगभग 190.9 मिलियन गौवंश एवं 108.7 मिलियन भैंस वंश है। 2012 की पशुगणना के अनुसार राजस्थान कुल देश के पशुधन की 11 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ दूसरे स्थान पर है (13.32 मिलियन गौवंश एवं 12.98 मिलियन भैंस वंश)। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में 30 से 50 प्रतिशत एवं 13 प्रतिशत सकल घरेलू उत्पाद में पशुपालन का योगदान है।

पशु उत्पादकता का तुलनात्मक अध्ययन करने पर भारत में प्रति पशु औसत उत्पादन वैश्विक औसत स्तर से बहुत कम है, इसका प्रमुख कारण प्रजनन संबन्धित समस्याएं हैं, जिससे पशुओं की उनकी उत्पादन क्षमता के अनुरूप उत्पादन नहीं हो पा रहा है। भारत में प्रतिदिन औसत दूध उत्पादन संकर गाय से 6.52 किलोग्राम, देशी गाय से 2.1 किलोग्राम एवं भैंसों से 4.4 किलोग्राम है (CSO,2010) A अनुमानतः देश को 20–30 मिलियन टन दुग्ध उत्पादन में वार्षिक हानि पशुओं के प्रजनन संबन्धित विकारों जैसे हीट में न आना या बार–बार मद में आना आदि से होती है, जो कि लगभग 40,000 से 50,000 करोड़ रू. की वार्षिक आर्थिक क्षति के लिए उत्तरदायी है।

राजस्थान की भौगोलिक परिस्थितियों के मद्देनजर चारागाह के अभाव में उपयुक्त मात्रा में चारा–दाना, पानी आदि संसाधनों की कमी होने से पशुपालकों के लिए पशुपालन चुनौतीपूर्ण व्यवसाय हो रहा है। इन सीमित संसाधनों का बंटवारा उत्पादक एवं अनुत्पादक पशुओं के मध्य होता है, ऐसी स्थिति में कम उत्पादन वाले पशुओं को रखना "कोढ में खाज" का काम करने जैसा है। पशुपालकों एवं तकनीकी कार्मिकों के समन्वित, योजनाबद्ध एवं क्रमिक प्रयासों से राज्य के 80 प्रतिशत अनुपयोगी एवं अनुत्पादक पशुओं को उपयोगी एवं उत्पादन योग्य बनाया जा सकता है और इस तरह आगे आने वाले वर्षों में बढती हुई जनसंख्या के अनुरूप दुग्ध उत्पादन की मांग को पूरा करके पोषण सुरक्षा एवं आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान की जा सकती है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु पशुपालकों की जागरूकता एवं पशुपालकोन्मुखी सरकारी योजनाओं का सही तरीके से क्रियान्वयन आवश्यक है। बांझपन निवारण हेतु मानव संसाधनों का समुचित प्रशिक्षण एवं आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराना जरूरी है। पशुचिकित्सकों एवं पशुधन सहायकों का विशेष प्रशिक्षण जिससे तकनीक का समुचित उपयोग एवं अनुभव का लाभ लेकर अनुत्पादक पशुओं को उत्पादन योग्य बनाया जा सके। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार के साथ–साथ ग्रामीणों को पोषण सुरक्षा भी मिल सकेगी।

उन्नत किस्म के पशुओं का चयन कर संसाधनों (पशु, मानवशक्ति, चारा–दाना, पानी, तकनीक आदि) का समुचित उपयोग कर सकते हैं। इसी तरह का योजनाबद्ध विकास गौशालाओं द्वारा अपना कर उन्हे स्वपोषित बनाया जा सकता है, जो कि भविष्य में गरीबी उन्मूलन एवं आर्थिक सुदृढ़ीकरण का उत्कर्ष माध्यम बन सकता है।

डॉ. सुनिता पारीक एवं डॉ. बरखा गुप्ता,
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां, वल्लभनगर

पशु-पक्षियों को फफूंदी जहर से कैसे बचायें ?

वर्षाकाल अथवा अन्य महीनों में भी नमीयुक्त वातावरण में चारे एवं दाने में फफूंद का उगना बहुत सामान्य है। इस फफूंद के उगने पर फफूंद द्वारा जहर का उत्पादन होता है, जो कि चारे–दाने को संक्रमित करता है। इस संक्रमित चारे–दाने को पशु–पक्षियों को खिलाने से वे फफूंदी जहर (फफूंद विषाक्तता) से प्रभावित हो सकते हैं। फफूंदी जहर से सभी प्रकार के पशु–पक्षी प्रभावित हो सकते हैं। संक्रमित चारे–दाने से जहर पशु–पक्षियों के पेट में जाता है और वहां से रक्त द्वारा अवशोषित हो कर उनके यकृत (लिवर) में पहुंच जाता है, जिससे यकृत की कार्यशीलता कम होती है तथा अत्यधिक जहर से यकृत को बहुत नुकसान होता है। पशु–पक्षी पर जहर का प्रभाव उसके द्वारा खाये गए जहर की मात्रा पर निर्भर करता है। इस प्रकार पशुओं में लक्षणहीनता से लेकर मृत्यु तक कोई भी प्रभाव देखा जा सकता है।

फफूंदी जहर से प्रभावित पशु सुस्त हो जाता है, भूख कम लगती है, उदास रहता है। खून की कमी हो जाती है। छोटे पशुओं में बढ़ोतरी नहीं होती है एवं दुधारू पशुओं में दूध का उत्पादन कम हो जाता है। मुर्गियों में अण्डे और मांस का उत्पादन कम होता है, पैरों में कमजोरी आती है और अधिक जहर के प्रभाव से मृत्यु भी हो सकती है। पशुपालकों को चाहिये कि यदि इस तरह के लक्षण पशु–पक्षियों में मिले तो वह चारे–दाने का अच्छी तरह निरीक्षण करें, चारे–दाने से नमी हटाने के लिए चारे–दाने को धूप में सुखायें एवं यकृत की कार्यशीलता बढ़ाने के लिए पशुचिकित्सक की निगरानी में उचित दवाईयों का प्रयोग करें। नमीयुक्त वातावरण में अत्यधिक चारे–दाने का भण्डारण बहुत सावधानी पूर्वक करें, ताकि फफूंद को रोका जा सके।

– प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

पशुओं से होने वाले रोगों से स्वयं भी सतर्क रहें

पशुओं को पालते वक्त इस बात को अक्सर तवज्जो नहीं दी जाती है कि कुछ रोग जानवरों के जरिये इंसानों में भी फैल सकते हैं। ग्रामीण दूध के लिए गाय या भैंस पालते है। यदि ये स्वस्थ न हो तो इनसे भी मनुष्यों में बीमारियां फैल सकती है। कई बार कच्चा दूध पीना या मांस खाना भी बीमारियों का कारण बनता है।

माताः– यह विशेषतः भैंसों का रोग है। रोगी पशु के थनों में चेचक के दाने पड़ जाते हैं। जब व्यक्ति इसके थनों को दूहता है तो यह रोग उस पर हमला कर देता है। उसे बुखार के साथ हाथों में दाने, दर्द व सूजन आ जाती है। ऐसे पशु को दस्ताने पहन कर अंत में दूहना चाहिए।

मुँह एवं खुरपका : गाय या भैंसों का यह विषाणुजनित रोग मनुष्यों में भी हो सकता है। इस रोग में पशु के खुरों और मुँह में छाले पड़ जाते हैं। यदि मनुष्य ऐसे पशु के संपर्क में आए तो उसे भी हाथों, तलवों में फफोले आ सकते हैं। इससे बचने के लिए पशुओं को हर वर्ष टीके लगवायें।

टी.बी. रोग : पशुओं में टी.बी. एक आम रोग है। इंसानों में यह रोग हवा या दूषित पानी के जरिये पहुंचता है। टी.बी. ग्रस्त पशुओं का दूध बगैर उबाले पीया जाए तो यह रोग मनुष्यों में हो सकता है। टी.बी. ग्रस्त पशु को कफ हो जाता है, शरीर सूखता जाता है, दस्त लग जाते हैं। पशुओं में यह लक्षण दिखने पर ग्वाले के भी रोगग्रस्त होने की आशंका होती है। इंसानों को लगातार खराश बने रहना, कफ में खून आना, तेज बुखार, वजन में कमी, रात को पसीना आना, सीने में दर्द जैसे लक्षण सामान्य हैं। इस तरह रोगों से बचने के लिए दूध को हमेशा उबालकर ही पीयें।

खुजली या स्केबीज : श्वानों में होने वाली खुजली अक्सर उनके मालिकों के लिए सरदर्द का कारण भी बन सकती है। इसमें श्वान खुजा–खुजा कर घाव कर लेता है। रोगग्रस्त श्वानों को पालने वालों को भी यह रोग हो सकता है। उन्हें गर्दन के नीचे वाले हिस्सों (हाथ–पैर) में हल्की खुजली होती रहती है जो रात के समय बढ़ जाती है। प्रभावित व्यक्ति को उपयोग में आने वाले कपड़ो को खोलते पानी में भिगोकर साबुन से धोना चाहिए।

रेबीजः रेबीज पशुओं से होने वाली सबसे खतरनाक बीमारी है। रेबीजग्रस्त पशु या मनुष्य को बचाया नहीं जा सकता है, यह लाइलाज बीमारी है श्वानों के काटने से होने वाली इस बीमारी में विषाणु लार के जरिए घाव में प्रविष्ट होते है। कई बार यदि गाय या भैंस को पागल श्वान काट ले और अनजाने में पशुपालक पशु के मुंह को जांचने के लिए उसके मुंह में हाथ डाल दे तो भी यह रोग हो सकता है। रेबीजग्रस्त व्यक्ति को हल्का बुखार, सिरदर्द, बदन में जलन, मुंह से लार टपकना, पानी देखकर डर लगना, चक्कर आना, निगलने में परेशानी होने जैसे लक्षण दिखाई देते है। रेबीज एक संक्रामक रोग है, इससे बचाव के लिए तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें, झाड़–फूंक के चक्कर में न पड़ें। पशुओं के साथ थोड़ी सावधानी रखी जाए तो इनके जरिए फैलने वाली बीमारियों का खतरा पशुपालकों के लिए काफी कम हो जाता है।

डॉ अनिल मूलचन्दानी एवं डॉ. मीनाक्षी सरीन (09782410301), वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुपालन से निहाल हुआ महेन्द्र

सफलता की कहानी

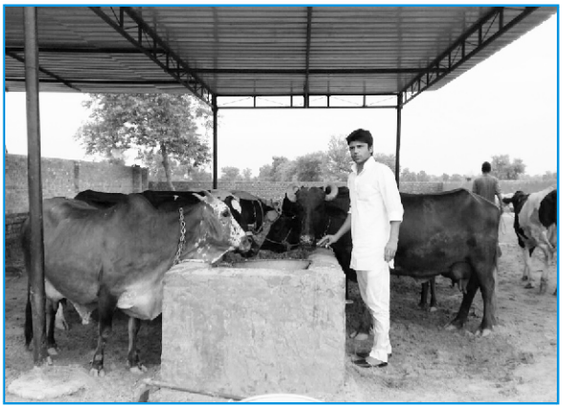

सूरतगढ़ तहसील में ग्राम 28 पी.बी.एन.(भगवानसर) के रहने वाले प्रगतिशील पशुपालक महेन्द्र पूनिया पुत्र श्री डूंगरसिंह ने अपने खेतों में कृषि एवं बागवानी के साथ साथ पशुपालन को भी आय का साधन बनाया है। युवा एवं सजग महेन्द्र ने शुरू में केवल अपने घर की आवश्यकता के अनुसार पशुपालन को अपनाया, परन्तु समय के साथ दूध की उपयोगिता एवं बाजार की जरूरत को ध्यान में रखते हुए पशुपालन को डेयरी व्यवसाय के रूप में शुरू किया। पूनिया के पास लगभग 125 बीघा जमीन है जिसमें से 70 बीघा नहरी, 25 बीघा कुएं से पैदावार की तथा 30 बीघा बिरानी है। पूनिया का कहना है कि जितनी बचत उन्हें पशुपालन (डेयरी) से हो रही है उतनी कृषि से नहीं है। अब उनके पास 13 गायें एवं 5 भैसें हैं, जिनसे 150 लीटर दूध प्रतिदिन ले रहे हैं। इस दूध को वे प्रतिदिन 4500 रूपये में बेच कर लगभग 2500 रूपये की बचत प्रतिदिन कर रहे हैं। पूनिया ने अपने फार्म के 2 बीघा क्षेत्र में पशुओं के रहने के लिए पशु शेड का निर्माण करवाया है। पशु शेड के दोनों तरफ छायादार पेड़ लगाये हैं, जिससे पशु शेड गर्मियों में ठण्डा एवं सर्दियों में गर्म रहे तथा पशुओं का बचाव हो। 24 घंटे साफ पानी का भी प्रबंध किया गया है। शेड को वैज्ञानिक तरीके से बनाया है जहां पशुओं को चारा एवं बांटा खिलाया जाता है। पूनिया ने 5 बीघा क्षेत्र को पशु चारा उत्पादन के लिए आरक्षित रखा है, इसके अलावा पशुओं के घूमने–फिरने के लिए भी अलग से प्रबंध किया गया है। महेन्द्र का कहना है कि वह समय–समय पर पशुओं का टीकाकरण करवाता है, जिससे पशुओं में किसी प्रकार की बीमारी नहीं होती। पशुओं को समय समय पर कृमिनाशी दवाई पिलाई जाती है जिससे पशुओं के उत्पादन में भी वृद्धि होती है। वैज्ञानिक तरीके से पशु पोषण किया जाता है। पूनिया का कहना है कि वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ से मिली नवीन तकनीकों का उपयोग कर पशु प्रबंधन कर रहे हैं तथा लगातार सम्पर्क में रहने तथा जानकारी प्राप्त कर उनका उपयोग करने से बहुत लाभ हुआ है। महेन्द्र समय की जरूरत एवं वीयूटीआरसी, सूरतगढ से मिली नवीन तकनीक जैसे अजोला उत्पादन, पशु चारा आचार (साइलेज) बनाना सीख कर तकनीक काम में ले रहे है। महेन्द्र डेयरी व्यवसाय को और अधिक बढ़ाना चाहता है तथा इसके लिए वह केन्द्र से प्रशिक्षण भी ले रहे हैं। **महेन्द्र पूनिया (मो.9214444744)**

निदेशक की कलम से...

नवीन तकनीक अपनाकर पशुपालन को लाभकारी बनाएं

प्रिय किसान और पशुपालक भाइयों।

स्वाधीनता दिवस के पावन पर्व पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। स्वाधीनता के 68 वर्ष में देश ने हर क्षेत्र में आशातीत प्रगति की है। अब कृषि और पशु पालन में नई तकनीक और वैज्ञानिक तौर–तरीकों को पूरी तरह अपनाने का समय है। खेती और पशुपालन को लाभदायक बनाने के लिए विविधिकरण उपायों को लागू करना होगा। खेतिहर फसलों के साथ ही पशुपालन की विभिन्न विधाओं को अपनाने से खेती में जोखिम को कम किया जा सकता है। गाय–भैसें, बकरी पालने के साथ मुर्गी, खरगोश, मधुमक्खी, मछली पालन जैसे छोटे व्यवसाय शुरू करने से आपकी आय में इजाफा हो सकता है। ये छोटे व्यवसाय खेती–बाड़ी के साथ करने से कम मेहनत और लागत में नियमित आय देने वाले हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर परिसर में पशु–पक्षियों के एक सजीव म्यूजियम में मुर्गी की सात विभिन्न प्रजातियों सहित बतख, खरगोश, एमू पालन, जापानी बटेर है। विविध पशुधन उत्पादन प्रणालियों को अपनाकर कृषि आय बढ़ाने के लिए कृषकों को प्रेरित करने का कार्य यहां किया जा रहा है। आप यहां आकर इनके पालन बाबत आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। राज्य के लाडनूं (नागौर), सूरतगढ (श्रीगंगानगर), चूरू, भरतपुर, टौंक, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ, अजमेर, कोटा और सिरोही जिलों में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों पर पशुचिकित्सा वैज्ञानिक कार्यरत हैं। इन केन्द्रों द्वारा जिलों में पशुपालकों के लिए प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन समय–समय पर किया जाता है। कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर (हनुमानगाढ), स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर तथा वेटरनरी महाविद्यालय, वल्लभनगर (उदयपुर) में भी पशुपालकों के लिए प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर स्थित परिसर में भी विभिन्न विभागों व केन्द्रों द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का समय–समय पर आयोजन किया जाता है। आप इन प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर उन्नत पशु पोषण, पशु चिकित्सा, चारा एवं आहार संरक्षण सहित पशुपालन बाबत विभिन्न जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं। पशुपालक भाई जागरूक रहकर इन सुविधाओं का लाभ उठाकर पशुपालन व्यवसाय को बढ़ा सकते हैं। –**प्रो. राजेश कुमार धूड़िया,** प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित धीणे री बात्यां के अन्तर्गत सितम्बर, 2015 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायं 5.30 से 6.00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठायें।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	डॉ. कमल पुरोहित 8890257135 प्रभारी अधिकारी, वीयूटीआरसी, बाकलिया–लाड़नू	भेड़ बकरियों में होने वाले फड़किया रोग के लक्षण एवं समाधान	03.09.2015
2	प्रो. आर.एन.कच्छावा 9829522444 एल.पी.टी. विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	वर्षा ऋतु में गाय भैंसों का उचित प्रबंधन	10.09.2015
3	डॉ. साकार पालेचा 9460002249 पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग,	पशुओं में आपातकालीन परिस्थितियों में प्राथमिक उपचार	17.09.2015
4	डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा 9784511656 प्रभारी अधिकारी, वीयूटीआरसी, कोटा	उन्नत पशुपालन तकनीकों का महत्व	24.09.2015

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : सितम्बर, 2015

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया